प्रकाशन तिथि : 26 अगस्त 2018, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 37, अंक 2, कुल पृष्ठ 28

ISSN 2454 - 5163

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक :
डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

वीतराग-विज्ञान (421)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	**10200**

जीव की कर्मशक्ति

अनंत स्वभाव के पिण्ड आत्मा पर दृष्टि करने से उस-उस समय की निश्चित निर्मल पर्याय कार्यरूप से प्राप्त होती है, वह आत्मा का कर्म है। "कर्म" कहने से यहाँ जड़ कर्म की अथवा रागादि भावकर्म की बात नहीं है, किन्तु चैतन्य स्वभाव में से जो सम्यग्दर्शनादि निर्मल पर्यायरूप कार्य प्राप्त किया जाये उसकी बात है। शुद्ध द्रव्य स्वभाव का अवलम्बन लेने से प्रतिक्षण नया-नया निर्मलभाव प्राप्त होता है; वह प्राप्त होने वाला भाव सिद्धरूप है अर्थात् प्रसिद्ध हो चुका है - प्रगट हो गया है। वस्तु में शक्तिरूप से तो अनादि से था, किन्तु अब वह भाव प्रसिद्ध हुआ-पर्याय में व्यक्त हुआ, इसलिये उसे सिद्धरूप भाव कहा है। "सिद्धरूप भाव" में अकेली सिद्ध दशा नहीं लेना चाहिये; किन्तु सम्यग्दर्शनादि समस्त निर्मल पर्यायें सिद्धरूप भाव में आ जाती हैं। वह प्राप्त होता हुआ सिद्धरूप भाव सो कर्म है; आत्मा अपनी शक्ति से उसरूप होता है, ऐसी उसकी कर्मशक्ति है।

– आत्मप्रसिद्धि, पृष्ठ 489-490

वीतराग-विज्ञान

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 37 (वीर नि. संवत् - 2544) 421 अंक : 2

तजि विषयन की यारी

मन हंस हमारी ले शिक्षा हितकारी।। टेक।।
श्री भगवान चरण पिंजरे बसि तजि विषयन की यारी।
मन हंस हमारी ले शिक्षा हितकारी।। 1 ।।

कुमति कागली सौं मति राचौ ना वह जात तिहारी।
कीजे प्रीत सुमति हंसी सौं बुध हंसन की प्यारी।।
मन हंस हमारी ले शिक्षा हितकारी।। 2 ।।

काहै को सेवत भव झीलर दुख जल पूरित खारी।
निज बल पंख पसारि उड़ो किन हो सरवरचारी।।
मन हंस हमारी ले शिक्षा हितकारी।। 3।।

गुरु के वचन विमल मोती चुग क्यों निज बान बिसारी।
ह्वै है सुखी सीख सुधि राखै भूधर भूले ख्वारी।।
मन हंस हमारी ले शिक्षा हितकारी।। 4।।

– कविवर पण्डित भूधरदासजी

अ.भा. जैन युवा फैडरेशन राजस्थान का –

प्रांतीय अधिवेशन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर 19 अगस्त को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान का प्रांतीय अधिवेशन हुआ।

कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने की। मुख्य अतिथि के रूप में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल उपस्थित थे। साथ ही पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई आदि महानुभाव उपस्थित थे।

इस अवसर पर जिनेन्द्रजी शास्त्री के स्वागत भाषण के उपरान्त श्री परमात्मप्रकाशजी एवं श्री शुद्धात्मप्रकाशजी ने भी अपने विचार व्यक्त किये। मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. भारिल्ल ने फैडरेशन की आवश्यकता एवं महत्व पर प्रकाश डाला।

सभा में अ.भा.जैन युवा फैडरेशन राजस्थान प्रांत की नवीन कार्यकारिणी की एवं अक्टूबर शिविर में राजस्थान की जैन प्रतिभाओं का सम्मान करने की घोषणा हुई।

कार्यक्रम का मंगलाचरण अंकितजी शास्त्री लूणदा, स्वागत गीत कु.विशुद्धि जैन जयपुर, संचालन डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर एवं आभार प्रदर्शन संजयजी सेठी जयपुर ने किया।

राष्ट्रीय संगोष्ठी संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में चल रहे आध्यात्मिक शिक्षण शिविर के अवसर पर दिनांक 16 अगस्त को अ. भा. दिगम्बर जैन विद्वत्परिषद् के तत्त्वावधान में 'जिन अध्यात्म के प्रतिष्ठापक आचार्य कुन्दकुन्द' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता विद्वत्परिषद् के अध्यक्ष डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने की।

इस अवसर पर पण्डित शिवचरणलालजी मैनपुरी, पण्डित विनोदकुमारजी रजवास, डॉ. पी.सी. रांवका जयपुर, डॉ. राजीवजी प्रचण्डिया अलीगढ, डॉ. अनिलकुमारजी जैन अहमदाबाद तथा डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने विविध पक्षों पर अपने विचार रखे।

समागत अतिथियों का सम्मान संयुक्त मंत्री डॉ. शांतिकुमारजी पाटील जयपुर ने किया। समारोह में डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, डॉ. बी.एल.सेठी आदि महानुभाव भी उपस्थित थे। कार्यक्रम में ब्र.रायमलजी कृत 'ज्ञानानन्द श्रावकाचार' तथा ब्र. हेमचंद्रजी हेम द्वारा रचित 'पंच समवाय चर्चा' का विमोचन किया गया।

सभा का संचालन महामंत्री श्री अखिलजी बंसल द्वारा किया गया।

सम्पादकीय

कुन्दकुन्द शतक अनुशीलन

(गतांक से आगे ...)

यदि थोड़ा भी परिग्रह हो तो...

(७८)

जह जायरूवसरिसो तिलतुसमेत्तं ण गिहदि हत्थेसु।
जइ लेइ अप्पबहुयं तत्तो पुण जाइ णिग्गोदं॥

(हरिगीत)

जन्मते शिशुवत अकिंचन नहीं तिलतुष हाथ में।
किंचित् परिग्रह साथ हो तो श्रमण जाँय निगोद में॥

जैसा बालक जन्मता है, साधु का रूप वैसा ही नग्न होता है। उसके तिल-तुष मात्र भी परिग्रह नहीं होता। यदि कोई साधु थोड़ा-बहुत भी परिग्रह ग्रहण करता है तो वह निश्चित रूप से निगोद जाता है।

यह गाथा अष्टपाहुड़ ग्रन्थ के सूत्रपाहुड़ नामक पाहुड़ की १८वीं गाथा है। इसमें कहा गया है कि श्रमण के रंचमात्र भी परिग्रह नहीं होता। यदि हो तो उस श्रमण का निगोद में जाना नक्की है।

हमारे साधुओं का स्वरूप तो वैसा ही होता है; जैसा एक बच्चे का स्वरूप जन्म लेते समय होता है। उस समय उसके हाथ में/साथ में तिलतुष मात्र परिग्रह नहीं होता। यदि रंचमात्र भी परिग्रह मुनिराजों के पास हो तो वे उसके फल में निगोद जाते हैं।

जैनदर्शन में किसी भी अपराध की सबसे बड़ी सजा, सबसे बड़ी जेल निगोद है। वहाँ इस जीव को अनंत दु:ख उठाने पड़ते हैं।

प्रश्न – अभी तो आपने कहा था कि जीव निगोद में मिथ्यात्व के कारण जाता है और अभी यहाँ कह रहे हैं कि जीव परिग्रह के कारण निगोद जाता है।

उत्तर – दोनों ही बातें सही हैं; क्योंकि मिथ्यात्व ही तो सबसे बड़ा परिग्रह है। चौबीस प्रकार के परिग्रहों में मिथ्यात्व सबसे बड़ा और नम्बर एक का परिग्रह है।

मिथ्यात्व के वश होकर जीव घोर पाप करता है और निगोद जाता है।

श्रमण नहिं, तिर्यंच हैं

(७९-८१)

सम्मूहदि रक्खेदि य अट्टं झाएदि बहुपयत्तेण।
सो पावमोहिदमदी तिरिक्खजोणी ण सो समणो ।।
रागं करेदि णिच्चं महिलावग्गं परं च दूसेदि।
दंसणणाणविहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ।।
पव्वज्जहीणगहिणं णेहं सीसम्मि वट्टदे बहुसो।
आयारविणयहीणो तिरिक्खजोणी ण सो समणो ।।

(हरिगीत)

जो आर्त होते जोड़ते रखते रखाते यत्न से।
वे पाप मोहितमती हैं वे श्रमण नहिं तिर्यंच हैं।।
राग करते नारियों से दूसरों को दोष दें।
सद्ज्ञान-दर्शन रहित हैं वे श्रमण नहिं तिर्यंच हैं।।
श्रावकों में शिष्यगण में नेह रखते श्रमण जो।
हीन विनयाचार से वे श्रमण नहिं तिर्यंच हैं।।

निर्ग्रन्थ नग्न दिगम्बर लिंग धारण करके भी जो बहुत प्रयत्न करके परिग्रह का संग्रह करता है, उसमें सम्मोहित होता है, उसकी रक्षा करता है, उसके लिए आर्त्तध्यान करता है; वह पाप से मोहित बुद्धिवाला श्रमण, श्रमण नहीं, पशु है, अज्ञानी है।

निर्ग्रन्थ दिगम्बर लिंग धारण करके भी जो महिलावर्ग में राग करता है, उनसे रागात्मक व्यवहार करता है, प्रीतिपूर्वक वार्तालाप करता है तथा अन्य निर्दोष श्रमणों या श्रावकों को दोष लगाता है; सम्यग्दर्शन-ज्ञान से रहित वह श्रमण, श्रमण नहीं, तिर्यंच योनिवाला है, पशु है, अज्ञानी है।

जो भेषधारी दीक्षा रहित गृहस्थों और शिष्यों में बहुत स्नेह रखता है और मुनि के योग्य आचरण तथा विनय से विहीन होता है; वह श्रमण, श्रमण नहीं, पशु है, अज्ञानी है।

ये गाथायें भी अष्टपाहुड़ के लिंगपाहुड़ की **५वीं, १७वीं और १८वीं** गाथायें हैं। इन गाथाओं में प्रत्येक में उन्हें श्रमण होते हुए भी तिर्यंच कहा गया है।

तीनों गाथाओं का अन्तिम पद इसप्रकार है –

तिरिक्खजोणी ण सो समणो – वे श्रमण नहीं, तिर्यंच हैं।

उक्त गाथाओं को ध्यान से पढ़ने पर दो बातों की ओर विशेष ध्यान जाता है –

१. आचार्य कुन्दकुन्ददेव के काल में भी, आज से लगभग दो हजार वर्ष पहले भी, साधुचर्या में इतना शिथिलाचार आ गया था कि दिगम्बर साधुगण भी परिग्रह जोड़ने लगे थे, उसकी अनेक प्रकार से रक्षा करते थे, उसके लिए आर्तध्यान करते हैं।

दूसरी ओर उनकी कटु आलोचना भी हो रही थी।

बात यहाँ तक बढ़ गई थी कि कुन्दकुन्द जैसे समर्थ और आध्यात्मिक आचार्य को भी इसमें उपयोग लगाना पड़ रहा था।

नग्नता दाव पर लग रही थी, दिगम्बर दशा दाव पर लग रही थी। कहा जा रहा था कि कुछ भी हो, पर वे श्रमण नहीं हैं, सच्चे दिगम्बर साधु नहीं हैं। उनके साधुत्व पर प्रश्नचिह्न खड़ा हो रहा था।

२. वर्तमान के साधुओं और उन्हें माननेवाले, पूजनेवालों को पता चल रहा है कि नग्न दिगम्बर साधुओं में भी कैसे-कैसे दोष हो सकते हैं ? उक्त प्रमाणों के आधार पर कुछ लोग आज दिखाई देनेवाले दोषों पर पर्दा डाल रहे हैं। कह रहे हैं कि ऐसे दोष तो कुन्दकुन्द के समय में भी होने लगे थे। यदि आज हो रहे हैं तो इसमें क्या आश्चर्य है?

अत: सर्वत्र सावधानी अपेक्षित है। मात्र वेष देखकर समर्पित हो जाना बुद्धिमानी नहीं है।

पार्श्वस्थ से भी निकृष्ट

(८२)

दंसणणाणचरित्ते महिलावग्गम्मि देदि वीसट्ठो।
पासत्थ वि हु णियट्ठो भावविणट्ठो ण सो समणो।।

(हरिगीत)

पार्श्वस्थ से भी हीन जो विश्वस्त महिला वर्ग में।
रत ज्ञान दर्शन चरण दें वे नहीं पथ अपवर्ग में।।

जो साधु वेष धारण करके महिलाओं में विश्वास उत्पन्न करके उन्हें दर्शन-ज्ञान-चारित्र देता है, उन्हें पढ़ाता है, दीक्षा देता है, प्रवृत्ति सिखाता है – इसप्रकार उनमें प्रवर्त्तता है; वह तो पार्श्वस्थ से भी निकृष्ट है, प्रकट रूप से भाव से विनष्ट है, वह श्रमण नहीं है।

यह गाथा अष्टपाहुड़ के लिंगपाहुड़ की २०वीं गाथा है। इसमें अकेले द्रव्यलिंग की निरर्थकता बताई गई है।

साधु वेश में महिलाओं से नजदीकी बढ़ाना, उन्हें दीक्षा देना, पढ़ाना, अनेक प्रकार की प्रवृत्तियों में लगाना – आदि क्रियाओं में प्रवृत्त साधु पार्श्वस्थ साधु हैं। वनवास से विरत होकर नगर के समीप आ जाने वाले भी पार्श्वस्थ हैं। पार्श्व में स्थित अर्थात् बगल में स्थित साधु पार्श्वस्थ साधु है।

उक्त संदर्भ में एक छन्द आत्मानुशासन में प्राप्त होता है; जो इसप्रकार है –

इतस्ततश्च त्रस्यन्तो विभावर्यां यथा मृगाः।
वनाद्विशन्त्युपग्रामम् कलौ कष्टं तपस्विनः।।[१]

जिसप्रकार मृग दिन के समय वन में भ्रमण करे, रात्रि के समय सिंहादिक के भय से वन छोड़कर गाँव के समीप आकर रहते हैं;

१. आचार्य गुणभद्र, आत्मानुशासन, श्लोक १९७

उसीप्रकार कलिकाल में मुनि भी दिन के समय वन में निवास कर रात्रि के समय गाँव के समीप आ जाते हैं। सो हाय ! हाय !! बड़ा कष्ट है। मुनि तो महानिर्भय होते हैं, वे मृगों के समान गाँव के समीप आकर कैसे बसते हैं।

भगवती आराधना में पार्श्वस्थ साधुओं का स्वरूप इसप्रकार स्पष्ट किया गया है –

"जो सुखस्वभाव होने से अकारण ही अयोग्य का सेवन करता है, वह पार्श्वस्थ कहलाता है।

निरतिचार संयममार्ग को जानते हुए भी उसमें नहीं प्रवर्तता, किन्तु संयममार्ग के पार्श्व में रहता है। जो एकान्त से संयत भी नहीं और न ही निरतिचारसंयमी है, वह पार्श्वस्थ कहलाता है।[१]"

उन पार्श्वस्थों से भी हीन प्रवृत्तिवाले साधुओं को यहाँ तिर्यंच कहा जा रहा है।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने जिस कठोरता से श्रमणों के शिथिलाचार का निषेध किया है; वह अपने आप में अद्भुत है; उनके कठोर प्रशासक रूप को प्रदर्शित करता है। आज समाज को उन जैसे कठोर प्रशासक आचार्य की आवश्यकता है।

परिग्रह का संग्रह और महिलाओं के प्रति आकर्षण श्रावकों के लिए अनर्थकर होता है; तो फिर श्रमणों के लिए तो अक्षम्य अपराध है।

सन्तों और श्रावकों को सजग होने की महती आवश्यकता है।

आचार्य कुन्दकुन्ददेव ने अष्टपाहुड़ ग्रन्थ में सन्तों के जिस रूप की अति कठोर शब्दों में आलोचना की है; उन्हें वे स्वयं भी द्रव्यलिंगी नहीं मानते; अपितु नटश्रमण कहते हैं। वस्तुतः बात यह है कि न तो भावलिंगी हैं, न द्रव्यलिंगी; वे उनकी दृष्टि में नटश्रमण हैं, उन्होंने तो नटों जैसा वेश धारण किया है।

(क्रमशः)

१. पण्डित अशाधरजी, भगवती आराधना, मूलाचार टीका, १९५०

छहढाला प्रवचन

निरतिचार व्रत पालन व सल्लेखना की प्रेरणा

बारह व्रत के अतिचार, पन पन न लगावै।
मरण समय सन्यास धारि, तसु दोष नशावै।।
यों श्रावक व्रत पाल, स्वर्ग सोलम उपजावै।
तहँ तैं चय नर जन्म पाय, मुनि ह्वै शिव जावै।।१५।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

मोक्षशास्त्र के सातवें अध्याय में प्रत्येक व्रत के पांच-पांच अतिचार बतलाये हैं, उन अतिचारों से रहित निर्दोष व्रत का जीवन पर्यन्त पालन करना चाहिए तथा मरण समय आने पर विशेषरूप से सल्लेखना धारण करके कषायों को कृश करना चाहिए। श्रावकधर्म के पालन करनेवाले जीव समाधिमरण करके उत्कृष्टपने सोलहवें देवलोक तक उत्पन्न होते हैं और वहाँ से चलकर उत्तम मनुष्य होकर मुनिदशा अंगीकार करके वीतराग और केवलज्ञानी होकर शिवपद को पाते हैं।

आनन्दकन्द शुद्ध आत्मा काया और कषायों से भिन्न है, उसका जहाँ भान हुआ, वहाँ सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान तो हो ही जाते हैं, व्रत होवें अथवा न भी हों, तथापि मोक्षमार्ग तो प्रारम्भ हो ही जाता है। पश्चात् जैसे-जैसे आत्मशुद्धि बढती जाती है, वैसे-वैसे कषाय छूटती जाती है तथा गुणस्थान के अनुसार व्रत-महाव्रत होते हैं। जब ऐसा निश्चय हो जाता है कि अब इस देह की स्थिति लम्बे समय तक टिकनेवाली नहीं है, मरण का समय निकट आ गया है, तब श्रावक सल्लेखना करता है अर्थात् चैतन्य स्वभाव

की उग्रता के बल से क्रम-क्रम करके कषायों का और आहार का त्याग करता है और वीतरागी समभावपूर्वक आराधकभाव सहित समाधिमरण करके स्वर्ग में जाता है। वहाँ स्वर्ग के दिव्य वैभव के बीच में भी सम्यग्दर्शन के बल से आत्मा की आराधना चालू रखते हुए उत्तम मनुष्य होता है, तत्पश्चात् मुनि होकर उत्कृष्ट आराधना से केवलज्ञान प्रकट करके मोक्षपद पाता है। मंगलमय वीतराग-विज्ञान का यह फल है। अत: हे भव्य जीवो ! इस मंगलमय और मंगलकरण वीतराग-विज्ञान का सदा प्रयत्न पूर्वक सेवन करो।

संसार भ्रमण करते हुए अज्ञानी जीव ने चैतन्य की शान्ति का स्वाद अनन्तकाल में कभी नहीं चखा, तत्त्व को जाने बिना इसने बाह्य संयोगों में ही सदा सुख माना है। अरे भाई ! पंचम गुणस्थानी मत्स्य भी देवलोक के इन्द्र से अधिक सुखी है, तो तू विचार तो कर कि यह सुख किसका होगा ? कहाँ से आता होगा ? अरे ! यह सुख कहीं बाहर से नहीं आता, आत्मा स्वयमेव सुखस्वभावी है, उसका वह परिणमन है।

सुखरूप से परिणमित उस पंचमगुणस्थानी जीव को इतनी महान शक्ति होती है कि चाहे जैसी प्रतिकूल परिस्थिति में भी उसको अनन्तानुबंधी अथवा अप्रत्याख्यान क्रोध-मान-माया-लोभ तो रंचमात्र भी नहीं होता तथा अन्य जो कषायें भूमिकानुसार विद्यमान हैं, वे भी अधिक मन्द पड़ गई हैं। राग रहित चैतन्य वस्तु जो उसके अनुभव में आई है, उसी में स्थिर होने से शान्ति बढती है और कषायें टलकर वीतरागता होती है। इसको जाने बिना अन्य किसी रीति से जीव किंचित् भी सुख नहीं पा सकता। सम्यग्दर्शन बिन पंचमहाव्रतों का पालन करे तथापि आत्मा का सुख मिलनेवाला नहीं और सम्यग्दर्शन सहित होने पर व्रत पालन किये बिना भी आत्मा के अपूर्व सुख में मग्न रहता है।

सम्यग्दर्शन के बाद भी जो राग होता है, वह तो बन्ध का ही कारण है और दु:ख है; परन्तु उसी समय राग से भिन्न वर्तती हुई उसकी चेतना अपूर्व सुख में लीन है। अहा ! ऐसे चेतनावन्त धर्मात्मा को कौन पहिचानेगा ? कोई विरला भेदज्ञानी ही उसको पहिचानेगा अर्थात् वही पहिचानेगा जो स्वयं मोक्षमार्ग का साधक होगा। बापू ! अज्ञान में तो तेरा अनन्तकाल चला गया, अब तो इस चिन्तामणि जैसे मनुष्य अवतार और जिनशासन को पाकर तू अपने सच्चे स्वरूप का ज्ञान कर, अपनी अपार महिमा को जान, जिससे तुझे अपूर्व अतीन्द्रिय आनन्द हो और तेरा आत्मा इस भव-भ्रमण से छूटकर अनन्तकाल के लिये सुखी हो जाए।

सम्यग्दर्शन के पश्चात् भी हिंसादि पापों से निवृत्त होकर व्रत-चारित्र के ग्रहण करने का उपदेश है। सम्यग्दृष्टि श्रावक को जितनी शुद्धता है, उतनी संवर-निर्जरा है और जितना राग है उतना आस्रव-बंध है। सम्यग्दृष्टि श्रावक को नियम से स्वर्ग का ही आयुष्य बंधता है, वह मरकर स्वर्ग में ही जाता है, अन्य किसी भी गति में नहीं जाता। स्वर्ग का अवतार राग का फल है, शुद्धता के फल में अन्तर की शान्ति मिलती है, संसार या भव नहीं मिलते, उसका फल तो मोक्ष है। श्रावक को कुछ राग शेष रह गया है, इसलिए उसे स्वर्ग का अवतार मिला, वहाँ से निकलकर वह मनुष्य होगा, पश्चात् मुनि होकर सम्पूर्ण वीतरागी चारित्र प्रकट करके मोक्ष प्राप्त करेगा वीतरागी चारित्र बिना कोई जीव मोक्ष नहीं पा सकता और सम्यग्दर्शन - ज्ञान प्रकट किये बिना वीतरागी चारित्र नहीं हो सकता। अत: प्रथम सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान की आराधना करके पश्चात् सम्यक् चारित्र की आराधना करना चाहिए - ऐसा उपदेश है।

इसप्रकार छहढाला की चौथी ढाल में सम्यग्ज्ञान तथा श्रावक के व्रतों का वर्णन किया। **(क्रमश:)**

नियमसार प्रवचन -

आचार में स्थिरता वाला प्रतिक्रमणमय

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के परमार्थप्रतिक्रमणाधिकार की गाथा ८५ पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है। गाथा मूलत: इसप्रकार हैं -

मोत्तूण अणायारं आयारे जो दु कुणदि थिरभावं।
सो पडिकमणं उच्चइ पडिकमणमओ हवे जम्हा ।।८५।।

(हरिगीत)

जो जीव छोड़ अनाचरण आचार में थिरता धरे।
प्रतिक्रमणमय है इसलिए प्रतिक्रमण कहते हैं उसे ।।८५।।

जो जीव अनाचार छोड़कर आचार में स्थिरता करता है, वह जीव प्रतिक्रमण कहा जाता है; क्योंकि वह प्रतिक्रमणमय है।

(गतांक से आगे....)

सहज ज्ञानस्वरूप आत्मा को उपशमरस से स्नान कराओ कि जिससे मिथ्यात्व और अव्रत उत्पन्न ही न हों।

आत्मा कैसा है? उसकी बात चलती है। शुभाशुभभाव क्षणिक हैं, आकुलतावाले हैं, उनसे रहित चैतन्यामृत से भरपूर आत्मा है।

गुड़ का भरा घड़ा हो; उसमें घड़ा है, वह गुड़ नहीं और उसके ऊपर के भाग में कुछ धूल लगी हो, वह भी गुड़ नहीं। उसीप्रकार यह शरीर घड़े के समान है, वह आत्मा नहीं और पुण्य-पापरूपी आकुलता धूल के समान है, उससे रहित आत्मा चैतन्य अमृत से गाढ़ भरा है। आत्मा प्रगट सहज ज्ञानस्वरूप है, उसकी श्रद्धा-ज्ञान करो और पर की रुचि छोड़ो। पर तथा पुण्य-पाप की श्रद्धा से तेरा आत्मा तिरेगा नहीं। पर तथा पुण्य-पाप से लाभ होगा - ऐसी मान्यता तो मिथ्यात्व की भक्ति है। आत्मा ज्ञान

और आनन्द से भरा है – ऐसी श्रद्धा-ज्ञान करना, वह सच्ची भक्ति है। इसप्रकार पुण्य-पाप की रुचि छोड़कर तथा शरीर का स्वामीपना छोड़कर आत्मा आनन्दकन्द है – ऐसी श्रद्धा-ज्ञान और रमणता करने पर अपनी पर्याय में शान्ति प्रकट होती है। उस शान्ति के भक्तियुक्त वीतरागभावरूप जल से भगवान आत्मा को स्नान कराओ कि जिससे मिथ्यात्व और अव्रत के परिणाम उत्पन्न ही न हों।

ज्ञान और आनन्दशक्ति अन्दर भरी है, उसमें एकाग्र होने से प्रतिक्रमण होता है। भाषा अथवा रागादि बाह्य लौकिक आलापजालों से प्रयोजन नहीं सधता।

देखो, यह धर्म की क्रिया है। सिद्धपद कैसे प्राप्त हो – यह बतलाते हैं। मोर के अण्डे के छिलके में से मोर नहीं जन्मता; किन्तु अन्दर में रस पड़ा है, उसमें से साढ़े तीन हाथ का मोर जन्मता है। शरीर, मन, वाणी, पुण्य-पाप इत्यादि छिलके के समान हैं, उनसे सिद्धपद नहीं आता; किन्तु आत्मा के अन्दर शक्ति पड़ी है, उसमें श्रद्धा-ज्ञान-रमणरता करने से पर्याय में भगवान प्रकट होता है। इसलिए यहाँ कहा है कि शमरस से आत्मा को स्नान कराओ। गंगा, जमना नदियों आदि में स्नान करने से पाप टलते हैं – ऐसा अज्ञानी लोग कहते हैं, वह सत्य नहीं है। स्वभाव में अन्तर्मुख अवलोकन करके समतारस से स्नान करो उससे प्रतिक्रमण होता है। अनेक लौकिक कथनसमूहों से कार्य सरे (सम्पन्न हो) – ऐसा नहीं है। यथार्थ भानपूर्वक प्रतिक्रमण करे तो मुक्तदशा प्राप्त हो – ऐसा है। उसके बिना राग मन्द पड़े तो पुण्य है, धर्म नहीं। **(क्रमशः)**

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र – श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com
ये सभी प्रवचन सामग्री अब vitragvani एप पर भी उपलब्ध है।

समयसार की 47 शक्तियों पर प्रवचन

जीवत्व शक्ति

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी द्वारा समयसार की 47 शक्तियों पर किये गये प्रवचनों को यहाँ पाठकों के लाभार्थ क्रमशः प्रकाशित किया जा रहा है।

(गतांक से आगे....)

अहा! यह तो वीतराग-सर्वज्ञ परमेश्वर का मार्ग है। प्रतिदिन 'णमो अरहंताणं' बोले परन्तु अरहंत परमेश्वर कौन हैं? उनकी लोगों को कुछ खबर ही नहीं।

अरे भाई! अरहंत का स्वरूप जानकर उन्हें नमस्कार करना – यह कोई अलौकिक चीज है।

आ हा हा....! भगवान अरहंत जैसा ही मेरा द्रव्यस्वभाव है – ऐसा जानकर जो निज द्रव्य स्वभाव की दृष्टि करता है, उसे शुद्ध जीवत्व सहित अतीन्द्रिय आनन्द का अनुभव होता है। उस **अतीन्द्रिय आनन्द की एक समय की पर्याय में षट्कारकरूप परिणमन है।**

आनन्द पर्याय स्वयं कर्ता, स्वयं ही कर्म, स्वयं ही करण (साधन), स्वयं ही अपादान और स्वयं ही अधिकरण है। इसप्रकार स्वयं षट्कारक रूप होकर परिणमन करती है। **इसमें व्यवहार से कार्य होता है; ये कहाँ रहा?**

यह तो द्रव्यसंग्रह की ४७वीं गाथा में ही आ गया कि **निश्चय और व्यवहार-मोक्षमार्ग ज्ञानी को ध्यान में एक-एक समय में एक ही साथ होते हैं।**

निश्चय और व्यवहार दोनों साथ होते हैं, फिर भी निश्चय व्यवहार नहीं और व्यवहार निश्चय नहीं। दोनों के षट्कारक भिन्न-भिन्न हैं, एक दूसरे से निरपेक्ष हैं; इसलिए **राग कर्ता और निर्मल पर्याय उसका कार्य – ऐसा कभी**

नहीं होता। यह दिव्यध्वनि में आई बात है।

अहा! दिव्यध्वनि की गंभीरता की क्या बात करना। देखो! **प्रथम स्वर्ग का इन्द्र समकिती, ३२ लाख विमानों का स्वामी है, उन विमानों में असंख्यात देव हैं। उसकी पटरानी-शची भी सम्यग्दृष्टि है। दोनों एक भवतारी हैं, एक मनुष्य का भव धारण करके दोनों मोक्ष जायेंगे। ऐसे इन्द्र और इन्द्राणी भी जिस भगवान की वाणी (ओम ध्वनि) सुनने आयें वह वाणी कैसी होगी?** अहा! वह वाणी भव्य जीवों को हितकारी-सुखकारी होती है।

सर्वज्ञ परमात्मा ऐसा कहते हैं कि भाई! तू एक जीवित वस्तु है या नहीं?

यदि है कि तो उसका कारण शुद्ध चैतन्य भावप्राण को धारण करनेवाली जीवत्वशक्ति ही है, उससे ही तू टिका रहा है; शरीर, इन्द्रियाँ, श्वांस, आहार-पानी तथा पैसा आदि से नहीं। ये संयोगी चीजें भले हों; परन्तु उनसे तेरा जीवन टिकता नहीं; क्योंकि वे भिन्न वस्तुयें हैं।

आ हा हा! यह जीवनशक्ति तो जीव के जीवन की जड़ी-बूटी है। भाई! जिसने इसे हस्तगत कर लिया, मानो वह अमर हो गया, उसे मरण का भय नहीं रहता।

भगवान! तू देहादि और रागादि से शून्य है। तेरी नजर में देहादि दिखते हैं, वहाँ से नजर उठाकर अपनी पर्याय को (नजर को) **सुख-निधान में जोड़ दे।** 'दया, दान, व्रत, भक्ति इत्यादि के विकल्प करने से तेरा सच्चा जीवन प्रगट होगा' - यह तेरी मान्यता मोहजन्य है, विभ्रम है बापू! ये सभी भाव तो दुःखरूप हैं।

एक आत्मा और निर्मल आत्मपरिणति ही निराकुल है, सुखमय है।

जैसे समुद्र में पूर आता है, वैसे ही भगवान आत्मा की अन्तर्दृष्टि करने से वर्तमान प्रगट पर्याय में अतीन्द्रिय आनन्द का पूर आता है। द्रव्यदृष्टिवन्त को जीवत्वशक्ति के समान ही अकार्यकारणशक्ति भी उछलती है। जिसके

द्वारा आत्मा व्यवहाररत्नत्रय का तथा राग का कार्य भी नहीं और कारण भी नहीं। व्यवहाररत्नत्रय के राग को आत्मा उत्पन्न करे - ऐसा भी नहीं है। आत्मा की निर्मलपर्याय का व्यवहार रत्नत्रय कारण बने - ऐसा भी नहीं। भगवान आत्मा पुण्य-पाप से शून्य है और अनन्त शक्तियों से पूर्ण है।

आत्मा अविशेषभाव स्वरूप है, विशेष-गुणभेद का स्वरूप आत्मा नहीं है (दृष्टि के विषय में भेद समाता ही नहीं।)

जैसे यह लोक अकृत्रिम है, वैसे ही लोक के द्रव्य भी किसी के द्वारा नहीं बनाये गये हैं, उनके गुण-पर्यायों का कर्ता भी कोई नहीं। द्रव्य-गुण को पर्याय का कर्ता कहना भी व्यवहार है। निश्चय से पर्याय का कर्ता, कर्म, करण, संप्रदान, अपादान और अधिकरण पर्याय है। पर्याय का कारण द्रव्य-गुण तो नहीं और पर भी नहीं, ऐसा वस्तु का स्वरूप जानकर पर से हटकर, निजस्वरूप जो अनन्तशक्तियुक्त ज्ञानमात्र आत्मा में लीन होता है, उसे जीवत्वशक्ति निमित्तरूप से उछलती है। उसका जीवन पवित्र और उज्ज्वल बनता है।

इसतरह यह जीवत्वशक्ति पूर्ण हुई। **(क्रमशः)**

(पृष्ठ 26 का शेष ...)

राघौगढ़, 13. **कोलाघाट :** पण्डित दीपमजी शास्त्री खतौली, 14. **कोलकाता :** पण्डित अमितजी शास्त्री फुटेरा, 15. **सम्मेदशिखरजी (विधान) :** पण्डित रमेशजी गायक इन्दौर, 16. **चम्पापुर :** पण्डित जागेशजी शास्त्री जबेरा।

दिल्ली प्रांत

1. **दिल्ली (अध्यात्मतीर्थ) :** ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री, पण्डित सोनूजी शास्त्री अहमदाबाद, पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित सम्मेदजी शास्त्री टीकमगढ़, 5. **दिल्ली (विश्वासनगर) :** पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 6. **दिल्ली (शिवाजी पार्क) :** पण्डित निर्मलजी सागर, 7-8. **दिल्ली (शिवाजी पार्क) वासुपूज्य जिनालय :** पण्डित सचिनजी शास्त्री सागर, पण्डित अपूर्वजी कोटा, 9. **दिल्ली :** पण्डित कैलाशजी शास्त्री बीकानेर, 10. **दिल्ली (बसंत विहार) :** पण्डित दिनेशजी कासलीवाल उज्जैन, 11. **दिल्ली (सैनिक फार्म) :** पण्डित अंचलजी शास्त्री ललितपुर। **(शेष नाम जैनपथप्रदर्शक में 2 सितम्बर के अंक में प्रकाशित किये जायेंगे)**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : जड़ में अनुभूति होती है क्या ?

उत्तर : हाँ, जड़ में भी अनुभूति होती है। उत्पाद-व्यय-ध्रुवरूप परिणमन करना ही जड़ में अनुभूति होना कहा जाता है।

प्रश्न : यह सारा प्रवचन सुनने के बाद स्मरण नहीं रहता, इसके लिये क्या करें?

उत्तर : यदि किसी व्यक्ति ने अपने को कोई चुभती हुई गाली दी हो तो वह तो याद रहती है न ? तो फिर गुण याद क्यों नहीं रहते ?

वास्तविकता तो यह है कि अपने को अपनी सच्ची दरकार नहीं है, इसलिये विस्मरण हो जाते हैं; यदि सच्ची दरकार हो,तो अवश्य स्मरण रहे ही।

प्रश्न : शास्त्र में मनुष्य के शरीर में कितने रोग होना कहा है ?

उत्तर : भाव पाहुड़ गाथा 37 में कहा कि इस मनुष्य के शरीर में एक-एक अंगुल स्थान में छियानवे-छियानवे रोग होते हैं। (इस हिसाब से समस्त शरीर में पाँच करोड़ अड़सठ लाख निन्यानवे हजार पाँच सौ चौरासी रोग रहते हैं। - 5,68,99,584)

प्रश्न : आप प्रवचनसार की अपेक्षा समयसार का अत्यधिक बखान करते हो। इसका क्या कारण है ?

उत्तर : प्रवचनसार में ज्ञानप्रधान कथन है और समयसार में दृष्टि कराने के प्रयोजन का कथन मुख्य है। समयसार में विकार को पुद्गल के लक्ष्य से उत्पन्न होता होने से और वह जीव का स्वभाव-भाव न होने से उसकी दृष्टि छुड़ाकर द्रव्य की दृष्टि कराने का कथन मुख्य है और उस द्रव्यदृष्टि से ही सम्यग्दर्शन तथा मोक्षमार्ग का प्रारंभ होता है।

समाचार दर्शन -

41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर सानन्द सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा दिनांक 12 से 21 अगस्त 2018 तक 41वाँ आध्यात्मिक शिक्षण शिविर अनेक मांगलिक आयोजनों सहित सम्पन्न हुआ।

दिनांक 12 अगस्त को प्रात: डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सान्निध्य में उद्घाटन सभा हुई। सभा के पूर्व शिक्षण शिविर एवं शिविर मण्डप का उद्घाटन श्री तन्मय-ध्याता-प्रेमचंदजी बजाज परिवार कोटा ने, मंच का उद्घाटन श्री सूरजमलजी हूमड़ परिवार रामगंजमण्डी ने एवं ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर की ओर से श्री विनयजी जैन, पूर्वी जैन व दिव्यम् जैन ने किया। इसके अतिरिक्त पण्डितप्रवर टोडरमलजी के चित्र का अनावरण श्री महेन्द्रकुमार-राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर व श्री संजयजी दीवान सूरत ने एवं गुरुदेवश्री के चित्र का अनावरण श्री कांतिभाई मोटाणी, श्री नितिनभाई शाह व श्री विपुलभाई मोटाणी मुम्बई द्वारा किया गया।

इस प्रसंग पर तत्त्वप्रचार में अभूतपूर्व योगदान हेतु उद्घाटन सभा के अध्यक्ष श्री संजयजी दीवान सूरत, श्री महेन्द्रजी गंगवाल जयपुर एवं श्री प्रेमचंदजी बजाज का पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा विशेष सम्मान किया गया, जिसमें ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलजी गोदिका द्वारा तिलक लगाकर साफा पहनाया गया एवं ट्रस्ट के प्रकाशन मंत्री ब्र.यशपालजी द्वारा शॉल ओढायी गयी।

प्रवचन – शिविर में प्रतिदिन प्रात:काल ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के '**आत्मानुभूति का उपाय**' विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये। डॉ. भारिल्ल के प्रवचनों के पूर्व गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचन एवं प्रश्नोत्तर हुए।

रात्रिकालीन प्रवचनों में प्रतिदिन ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा '**पांच भाव**' विषय पर प्रवचनों के पूर्व पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित शैलेषभाई तलोद, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा, पण्डित विपिनजी शास्त्री मुम्बई, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित अध्यात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि विशिष्ट विद्वानों के व्याख्यानों का लाभ मिला।

शिक्षण कक्षायें – द्रव्य-परिचय पर ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना द्वारा, **पुरुषार्थ से मोक्षप्राप्ति** विषय पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा, **समयसार (गाथा** 3-5**)** पर पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा, **क्रमबद्धपर्याय** पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर एवं **गुणस्थान विवेचन** पर डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा कक्षायें ली गईं।

प्रात: 5.30 से पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा, पण्डित सुरेशचंदजी टीकमगढ, पण्डित

सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित शिखरचंदजी विदिशा द्वारा ली गई प्रौढ कक्षा के तत्काल बाद जिनवाणी चैनल पर डॉ. भारिल्ल एवं अरिहंत चैनल पर गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रवचन का प्रसारण प्रवचन हॉल में प्रोजेक्टर द्वारा हुआ।

दोपहर में बाबू युगलजी के सी. डी. प्रवचन के पश्चात् महाविद्यालय के छात्र विद्वानों द्वारा प्रवचन हुये। तत्पश्चात् व्याख्यानमाला के अन्तर्गत दो विद्वानों के प्रवचन का लाभ मिलता था, जिनमें डॉ. दीपकजी जैन 'वैद्य', डॉ. नरेन्द्रकुमारजी शास्त्री जयपुर, पण्डित स्वानुभवजी अहमदाबाद, पण्डित संजयजी सेठी, डॉ. राजेन्द्रजी बंसल अमलाई, पण्डित अनेकान्तजी भारिल्ल, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री, डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा, पण्डित प्रमोदजी शास्त्री शाहगढ आदि विद्वानों के प्रवचनों का लाभ मिला।

सायंकाल बालकक्षायें डॉ.शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई के निर्देशन में महाविद्यालय के विद्यार्थियों द्वारा चलाई गई।

शिविर के अवसर पर 'श्री समयसार महामंडल विधान' एवं डॉ. भारिल्ल द्वारा नवनिर्मित 'श्री 24 तीर्थंकर विधान' के आमंत्रणकर्ता श्री भरतभाई मेहता सूरत, पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, श्री शांतिलालजी चौधरी भीलवाड़ा, श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, श्री वीरेशजी कासलीवाल सूरत, श्रीमती लीला-प्रेमचंदजी जैन दौसा थे।

विधान के समस्त कार्य डॉ. शांतिकुमारजी पाटील के निर्देशन में पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, जिनेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, अनेकान्तजी शास्त्री रहली, वीकेशजी शास्त्री खड़ैरी एवं रजतजी शास्त्री जयपुर के सहयोग से हुये।

शिविर के समापन समारोह में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने सभी विद्वानों एवं साधर्मियों का आभार प्रदर्शन किया। शिविर में 28 विद्वानों के माध्यम से लगभग 1000-1200 साधर्मियों ने प्रतिदिन 16 घंटे तक चलने वाले तत्त्वज्ञान के कार्यक्रमों का लाभ लिया। हजारों घंटों के सी.डी./डी.वी.डी. प्रवचन तथा हजारों रुपयों का सत्साहित्य घर-घर पहुंचा। ●

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

6 से 13 सितम्बर	**अध्यात्म स्टडी सर्किल-मुम्बई**	**श्वेताम्बर पर्यूषण**
14 से 25 सितम्बर	**बेलगांव (कर्नाटक)**	**दशलक्षण महापर्व**
5 से 12 अक्टूबर	**जयपुर**	**शिक्षण शिविर**
16 से 21 अक्टूबर	**पोन्नूर**	**तमिलनाडु तीर्थयात्रा**
31 अक्टूबर	**मुम्बई**	**शिखरजी यात्रा गमन कार्यक्रम**
4 से 8 नवम्बर	**देवलाली**	**दीपावली**

दशलक्षण महापर्व में धर्म प्रभावनार्थ कहाँ-कौन ?

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट द्वारा प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी दिनांक 14 सितम्बर 2018 से प्रारम्भ हो रहे दशलक्षण महापर्व में समाज के आमंत्रण पर तत्त्वप्रचारार्थ विद्वान भेजे जा रहे हैं। पर्व के प्रारंभ होने में लगभग 23 दिन का समय शेष है, तथापि दिनांक 21 अगस्त 2018 तक हमारे पास 375 स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो चुके हैं और अभी भी अनेक स्थानों से आमंत्रण प्राप्त हो रहे हैं। दिनांक 21 अगस्त 2018 तक लिये गये निर्णयानुसार अब तक लगभग 294 स्थानों पर ही विद्वान निश्चित हो सके हैं; शेष स्थानों पर विद्वान निश्चित करना बाकी है। अभी तक तैयार सूची यहाँ प्रकाशित की जा रही है -

विशिष्ट विद्वान : 1. **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** बेलगांव, 2. **पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर :** जयपुर, 3. **ब्र. यशपालजी जैन जयपुर :** जयपुर, 4. **पण्डित ज्ञानचन्दजी जैन विदिशा :** सोनागिर, 5. **ब्र. सुमतप्रकाशजी जैन खनियांधाना :** उदयपुर (मुमुक्षु मण्डल), 6. **पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी उज्जैन :** सिंगोली, 7. **ब्र. जतीशचन्दजी शास्त्री सनावद :** दिल्ली (आत्मार्थी ट्रस्ट), 8. **ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना :** सांगली, 9. **पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर :** दिल्ली (विश्वास नगर), 10. **पण्डित अभयकुमारजी देवलाली :** औरंगाबाद, 11. **ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली :** करेली, 12. **पण्डित शांतिकुमारजी पाटील जयपुर :** छिन्दवाड़ा, 13. **पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा :** इन्दौर (साधनानगर), 14. **पण्डित शैलेशभाई शाह तलौद :** कोलकाता, 15. **पण्डित राकेशजी शास्त्री नागपुर :** मुम्बई (बोरीवली), 16. **पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन :** मंगलायतन, 17. **पण्डित सुनीलजी जैनापुरे राजकोट :** मुम्बई (भायन्दर), 18.**पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर :** हिंगोली, 19. **पण्डित अनिलकुमारजी शास्त्री भिण्ड :** भिण्ड (देवनगर), 20.**ब्र. कैलाशचन्द्रजी अचल :** मैनपुरी, 21. **संवेगी केशरीचंदजी धवल :** सूखाजी (तारण-तरण तीर्थक्षेत्र) 22. **डॉ. दीपकजी जैन जयपुर :** भीलवाड़ा (अजमेरों की गोठ), 23. **पण्डित रमेशजी मंगल सोनगढ़ :** ग्वालियर (सोडा का कुआ)।

विदेश : 1. **लन्दन :** डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, 2. **न्यूजर्सी :** पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर, 3. **अमेरिका :** पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी, 4. **नैरोबी :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री पालड़ी, 5. **दुबई :** डॉ. नीतेशजी शाह जयपुर, 6. **शिकागो :** पण्डित संजयजी शास्त्री जेवर, 7. **ऑनलाइन :** पण्डित अरूणजी शास्त्री बण्ड जयपुर, 8. **सिएटल :** पण्डित विक्रांतजी शास्त्री सोलापुर, 9. **सेनफ्रांसिस्को (अमेरिका) :** डॉ. वीरसागरजी जैन दिल्ली, 10. **दुबई :** डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, 11. **सिडनी (ऑस्ट्रेलिया) :** आराध्य शास्त्री टडैया मुम्बई।

मध्यप्रदेश प्रांत

1. **अशोकनगर :** पण्डित देवेन्द्रकुमारजी बिजौलिया, 2. **जबलपुर :** पण्डित विपिनकुमारजी शास्त्री मुम्बई, 3. **इन्दौर (साधनानगर) :** पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी आगरा, 4. **करेली :** ब्र. हेमचन्दजी 'हेम' देवलाली, 5. **छिन्दवाड़ा :** डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर, 6. **भोपाल**

(कोहेफिजा) : पण्डित मनीषजी शास्त्री बरेली इन्दौर, 7. **केसली :** पण्डित शिखरचन्दजी विदिशा, 8-9. **बण्डा :** पण्डित सिद्धार्थजी दोशी रतलाम, पण्डित जे.पी. दोशी रतलाम, 10. **द्रोणगिरी :** पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, 11-12. **सोनागिर :** पण्डित ज्ञानचन्दजी विदिशा, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री गुना, 13. **सोनागिर :** पण्डित विनोदजी चिन्मय विदिशा, 14-15. **सोनागिर :** पण्डित मुकेशजी तन्मय विदिशा, पण्डित रमेशजी लवाण जयपुर, 16. **सिंगोली :** पण्डित विमलप्रकाशजी झांझरी, 17. **बीना :** ब्र. चन्द्रेश भैय्या बीना, 18. **रतलाम (आदिनाथ चैत्यालय) :** विदुषी राजकुमारी दीदी दिल्ली, 19. **गुना (महावीर जिनालय) :** डॉ. महावीरप्रसादजी उदयपुर, 20. **कटनी :** पण्डित रमेशजी शास्त्री जयपुर, 21. **सिवनी :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री दिल्ली, 22. **विदिशा (किला अन्दर) :** पण्डित अच्युतकान्त शास्त्री जयपुर, 23. **इन्दौर (पलासिया) :** पण्डित चेतनभाई राजकोट, 24-25. **इन्दौर (रामचन्द्र नगर) :** पण्डित पद्मजी गंगवाल, पण्डित दीपकजी, पण्डित तेजकुमारजी गंगवाल, 26. **इन्दौर (संगम नगर) :** पण्डित अशोकजी शास्त्री रायपुर, 27. **इन्दौर (रामाशा मन्दिर) :** डॉ. नरेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 28. **इन्दौर (स्वाध्याय भवन) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, 29. **इन्दौर (ग्रेटर बृजेश्वरी) :** पण्डित लालारामजी एडवोकेट अशोकनगर, 30.**इन्दौर (गांधीनगर) :** पण्डित विवेकजी शास्त्री गौरझामर, 31-32. **इन्दौर (ओम विहार) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित कार्तिकजी बांदा, 33.**उज्जैन (क्षीरसागर) :** पण्डित अनुभवजी करेली, 34. **गुना (वीतराग-विज्ञान) :** पण्डित राहुलजी रानीपुर, 35. **भोपाल (चौक) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री मुम्बई, 36. **भिण्ड (परमागम मन्दिर) :** डॉ. विवेकजी जैन छिन्दवाड़ा, 37. **खनियांधाना :** पण्डित तपिशजी शास्त्री उदयपुर, 38. **भिण्ड (देवनगर) :** पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, 39-40. **जावरा :** पण्डित निखिलजी शास्त्री कोतमा, पण्डित अभयजी शास्त्री ग्वालियर, 41. **वडनगर :** पण्डित संजयजी शास्त्री परतापुर, 42. **शहडोल :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री खनियांधाना जयपुर, 43. **शाहगढ़ :** पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर, 44. **सागर (तारण-तरण) :** पण्डित जयकुमारजी कोटा, 45.**सागर (तारण-तरण) कक्षा :** पण्डित अतिशयजी शास्त्री चौरई जयपुर, 46. **मगरौन (तारण-तरण) :** पण्डित दीपकजी शास्त्री बमनपुरा जयपुर, 47. **बीड :** पण्डित राहुलजी शास्त्री हीरापुर कोटा, 48. **मन्दसौर (कालाखेत) :** पण्डित सुरेशचन्दजी गुना, 49. **शहापुर (बुरहानपुर) :** पण्डित वैभवजी शास्त्री खोत बांसवाड़ा, 50. **शुजालपुर सिटी :** पण्डित अक्षयजी शास्त्री सौरई कोटा, 51.**गौरझामर (शांतिनाथ जिनालय) :** पण्डित डॉ. सचिन्द्रजी गढ़ाकोटा, 52.**नरवर :** पण्डित मयंक लखनादौन जयपुर, 53. **रांझी (जबलपुर) :** पण्डित जिनेशजी सेठ शास्त्री मुम्बई, 54.**कुचड़ौद :** पण्डित सत्यमजी शास्त्री सुर्खी जयपुर, 55. **आरोन :** ब्र. प्रतीकजी शास्त्री जबलपुर, 56. **मकरोनिया (सागर) :** पण्डित रितेशजी शास्त्री बांसवाड़ा, 57. **शहापुरा भिटोनी :** पण्डित अंकितजी शास्त्री बण्डा, 58. **नागदा जंक्शन :** पण्डित अंकितजी शास्त्री भगवां जयपुर, 59. **कोलारस (आदिनाथ) :** विदुषी ब्र. ममताजी टीकमगढ, 60. **गौरझामर**

(नयापुरा) : पण्डित कमलेशजी शास्त्री मौ, 61. **धार :** पण्डित गोम्मटेशजी शास्त्री हेरले, 62. **राधौगढ :** पण्डित शनिजी शास्त्री खनियांधाना, 63. **निसईजी :** पण्डित रतनलालजी होशंगाबाद, 64. **निसईजी :** विदुषी पुष्पाबेनजी होशंगाबाद, 65.**निसईजी :** पण्डित सुधीरजी सहयोगी सागर, 66. **निसईजी :** पण्डित राजकुमारजी सर्राफ सागर, 67. **निसईजी :** पण्डित दीपकजी शास्त्री बकस्वाहा, 68. **जबेरा :** पण्डित निर्मलजी एडवोकेट एटा, 69. **शिवपुरी (शांतिनाथ मंदिर) :** पण्डित सुरेशचंदजी बदरवास, 70. **शिवपुरी (परमागम मंदिर) :** पण्डित अरुणजी मोदी सागर, 71. **फुटेरा :** पण्डित शशांकजी शास्त्री सागर, 72-73. **द्रोणगिरी :** पण्डित शुभमजी शास्त्री, रोहितजी शास्त्री, 74. **बदनावर (धार) :** पण्डित प्रमोदजी शास्त्री बांसवाड़ा, 75. **बावई (होशंगाबाद) (तारण-तरण) :** पण्डित संयमजी शास्त्री मडदेवरा जयपुर, 76. **सनावद (समवशरण मन्दिर) :** पण्डित रमनजी शास्त्री मौ, 77. **हरदा :** विदुषी कुसुमलताजी 78. **बेगमगंज (तारण-तरण चैत्यालय) :** पण्डित चेतनजी शास्त्री खड़ैरी जयपुर, 79. **खुरई (गुरुकुल) :** पण्डित नियम शास्त्री सिलवानी, 80. **खुरई (स्टेशन मन्दिर) :** पण्डित प्रयंक शास्त्री रहली, 81. **शाहबाद :** पण्डित भगवतीप्रसाद शास्त्री समरानिया, 82.**छिंदवाड़ा (गांधीगंज) :** विदुषी प्रतीति शास्त्री जयपुर, 83. **दलपतपुर :** पण्डित अमनजी शास्त्री दिल्ली, 84. **सुजालपुर मण्डी :** पण्डित विकासजी टीकमगढ़ कोटा, 85. **पथरिया :** पण्डित नरेन्द्रकुमारजी जबलपुर, 86. **लुकवासा :** पण्डित शाश्वतजी शास्त्री बड़ामलहरा जयपुर, 87. **गंधवानी (धार) :** पण्डित पद्मजी कोटा, 88. **भोपाल (ज्ञानोदय तीर्थ) :** विदुषी पुष्पाजी खण्डवा, 89. **सागर (महावीर जिनालय) :** ब्र. सुनीलजी शास्त्री शिवपुरी, 90.**कोलारस (चौधरी मोहल्ला) :** ब्र. दीप्ती अमायन, 91. **भोपाल (कोलार रोड़) :** पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री सिलवानी, 92. **पचमढी :** पण्डित आशीषजी शास्त्री मड़ावरा, 93-94. **ग्वालियर (मुरार) :** पण्डित गजेन्द्रकुमारजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित संचितजी शास्त्री ग्वालियर 95. **खड़ैरी :** पण्डित समर्थजी शास्त्री विदिशा जयपुर, 96.**खंडवा :** पण्डित सौरभजी शास्त्री इन्दौर, 97.**मंडी द्वीप :** पण्डित भूपेन्द्रजी शास्त्री विदिशा जयपुर, 98. **सागर (बालकव्यू) :** पण्डित सन्मतिजी शास्त्री मोदी, 99. **खुरई :** पण्डित राहुलजी शास्त्री अशोकनगर, 100.**होशंगाबाद (तारण समाज) :** पण्डित प्रदीपकुमारजी कुन्डा, 101. **मन्दसौर (नई आबादी) :** पण्डित चिन्मयजी शास्त्री पिड़ावा, 102. **टीकमगढ़ :** पण्डित पुनीतजी मंगलवर्धिनी भोपाल, 103. **बदरवास :** पण्डित सपनजी शास्त्री जयपुर, 104. **ग्वालियर (फालका बाजार) :** पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, 105. **गढ़ाकोटा :** डॉ. मानमलजी कोटा, 106.**ग्वालियर (सोडा का कुआँ) :** पण्डित रमेशजी मंगल सोनगढ़, 107. **मुक्तागिरी :** पण्डित जीवराजजी पुणे, 108. **बेगमगंज :** पण्डित सुदीपजी बीना।

महाराष्ट्र प्रांत

1. **औरंगाबाद :** पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, 2. **सांगली :** ब्र. अभिनन्दनकुमारजी देवलाली, 3. **मुम्बई (बोरीवली) :** डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, 4. **मुम्बई दादर :** डॉ. मनीषजी

शास्त्री मेरठ, 5. **मुम्बई (घाटकोपर) :** पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, 6. **मुम्बई (भायंदर-वेस्ट) :** पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, 7. **मुम्बई (मलाड-ईस्ट) :** पण्डित राकेशजी शास्त्री दिल्ली, 8. **मुम्बई (सीमंधर जिनालय) :** डॉ. प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा, 9. **मुम्बई (एवरशाईनगर) :** पण्डित सौरभजी शास्त्री शहपुरा, 10. **मुम्बई (एवरशाईनगर विधान हेतु) :** पण्डित अभिनयजी शास्त्री जबलपुर, 11. **वाशी (नवी मुम्बई) :** डॉ. जयंतीलालजी मंगलायतन, 12. **मुम्बई (कांदीबली) :** पण्डित बाबूभाई मेहता फतेपुर, 13. **मुम्बई (विक्रोली) :** डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी गुढ़ाचन्द्रजी, 14. **मुम्बई (वसई रोड) :** पण्डित पवनजी शास्त्री मुम्बई, 15. **नागपुर (इतवारी) :** ब्र. श्रेणिकजी जबलपुर, 16. **गजपंथा :** पण्डित प्रकाशचन्दजी झांझरी उज्जैन, 17. **जलगांव :** पण्डित अरहन्तप्रकाशजी झांझरी उज्जैन, 18.**पुणे (युवा संघ) :** पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, 19. **हिंगोली :** पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, 20. **सोलापुर :** पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री कोटा, 21. **वाशिम (जवाहर कालोनी) :** पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, 22. **कारंजा (लाड) :** पण्डित संजयजी शास्त्री सेठी जयपुर, 23. **चिखली :** पण्डित जितेन्द्रजी शास्त्री जयपुर, 24.**मालशिरस :** पण्डित सिद्धान्तजी शेट्ठी जयपुर, 25. **अनसिंग :** पण्डित नन्दकिशोरजी मांगुलकर, 26. **फालेगाँव :** पण्डित आकाशजी शास्त्री हलज, 27. **अकोला :** ब्र. प्रवीणजी देवलाली, 28. **कोल्हापुर :** पण्डित संयमजी शास्त्री शेटे कोल्हापुर, 29. **विहीगाँव :** पण्डित सागरजी शास्त्री अलमाने बांसवाड़ा, 30. **देऊलगाँवराजा :** पण्डित ऋषभजी शास्त्री अहमदाबाद, 31. **देवलाली (विधान हेतु) :** पण्डित दीपक धवल भोपाल, 32-33. **मलकापुर :** ब्र. पुष्पाजी ज्ञानधारा उज्जैन, विदुषी ज्ञानधाराजी उज्जैन, 34. **शिरपुर :** पण्डित शिवराजजी शास्त्री स्वामी जयपुर, 35. **बाहुबली (कुंभौज) :** डॉ. नेमीनाथजी दानोली, 36. **नागपुर :** पण्डित अभिषेकजी शास्त्री हीरापुर, 37. **देवलाली :** पण्डित अंकुरजी शास्त्री भोपाल, 38. **महूद :** पण्डित श्रेणिक लट्ठे जयपुर, 39. **पंढरपुर :** पण्डित अनिलजी इंजि. इन्दौर, 40. **सेनगांव :** पण्डित विनीतजी शास्त्री मुम्बई जयपुर, 41-42. **अकलूज :** पण्डित शीतलजी दोशी नातेपुते, पण्डित श्रीसान्तजी शास्त्री हिंगोली, 43. **नातेपुते :** पण्डित दिलीपजी बाकलीवाल इन्दौर, 44. **इचलकरंजी :** ब्र. सुधाबेन छिन्दवाड़ा, 45. **बालचन्दनगर :** पण्डित सम्मेदजी शास्त्री खोत जयपुर, 46.**मालेगांव :** पण्डित शुभम् नाके शास्त्री जयपुर, 47. **वाशिम (सैतवाल मंदिर) :** पण्डित गौरवजी शास्त्री जयपुर, 48. **सेलु :** पण्डित समकितजी शास्त्री गुना, 49-50. **हिंगोली :** पण्डित अमोलजी सिंघई, पण्डित पंकजजी शास्त्री।

राजस्थान प्रांत

1-2. **जयपुर (टोडरमल स्मारक) :** पण्डित रतनचन्दजी भारिल्ल जयपुर, ब्र. यशपाल जैन जयपुर, 3. **उदयपुर (मु. मंडल) :** ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, 4. **जयपुर (आदर्श नगर) :** पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, 5. **उदयपुर (नेमीनगर) :** ब्र. निखिल भैया भायन्दर, 6.**उदयपुर (गायरीयावास) :** पण्डित पद्मकुमारजी इन्दौर, 7. **कोटा (इन्द्र विहार) :** पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, 8. **कोटा (रामपुरा) :** पण्डित आकेशजी छिन्दवाड़ा, 9. **अलवर (मु. मंडल) :** पण्डित गुलाबचन्दजी बीना, 10. **अलवर (मुमुक्षु मण्डल) विधान :** पण्डित संयमजी शास्त्री दिल्ली, 11. **रावतभाटा :** पण्डित सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, 12. **पिडावा :** पण्डित सुनीलकुमारजी देवरी, 13-14. **अजमेर (वी.विज्ञान भवन) :** पण्डित संजयजी पुजारी खनियांधाना, पण्डित सुनीलजी धवल भोपाल, 15. **अजमेर (वैशालीनगर) :** पण्डित अनिलजी धवल भोपाल, 16. **बून्दी (मुमुक्षु मण्डल) :** पण्डित मंथनजी गाला जयपुर, 17.**भीलवाड़ा (अजमेरों की गोठ) :** डॉ. दीपकजी जैन जयपुर, 18. **भीलवाड़ा (शास्त्रीनगर) :** विदुषी श्रुति शास्त्री जयपुर, 19. **कानोड :** पण्डित एकांशजी शास्त्री जयपुर, 20. **जावर माइन :** पण्डित समकितजी शास्त्री बक्स्वाहा जयपुर, 21. **भीण्डर :** पण्डित अश्विनजी शास्त्री नौगांवा, 22. **भीण्डर (विधान) :** पण्डित संयम देशमाने जयपुर, 23. **लूणदा :** पण्डित अमनजी शास्त्री आरौन जयपुर, 24-25. **सेमारी :** पण्डित अर्पितजी शास्त्री सेमारी, पण्डित दीपकजी शास्त्री सेमारी, 26. **कुशलगढ़ (बड़ा मन्दिर) :** पण्डित नयनजी शास्त्री बरायठा जयपुर, 27. **कुशलगढ़ (छोटा मन्दिर) :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री हरावत जयपुर, 28. **बिजौलिया :** पण्डित चन्दूलालजी कुशलगढ़, 29. **पीसांगन :** ब्र. रविजी ललितपुर, 30. **पीसांगन (विधान हेतु) :** पण्डित निष्कर्षजी शास्त्री नौगाँव जयपुर, 31. **देवली (अग्रवाल) :** पण्डित राहुलजी शास्त्री मुम्बई, 32. **टोकर :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री सिवनी, 33.**साकरोदा :** पण्डित आकाशजी शास्त्री मौ, 34. **बीकानेर :** पण्डित विनम्रजी बड़ागांव, 35. **झालरापाटन :** पण्डित नमनजी शास्त्री खनियांधाना, 36. **चित्तौड़गढ़ (कुम्भानगर) :** पण्डित फूलचन्दजी हिंगोली, 37. **वल्लभनगर :** पण्डित अक्षयजी शास्त्री दलपतपुर, 38. **कूण :** पण्डित शुभजी शास्त्री गडाकोटा, 39. **डबोक :** पण्डित संयमजी शास्त्री तिगोडा, 40. **बारा :** पण्डित नन्दकिशोरजी गोयल विदिशा, 41. **अलीगढ़ :** पण्डित सन्मतिजी शास्त्री कर्रापुर, 42. **किशनगढ़ :** पण्डित पारसजी शास्त्री खेकड़ा, 43. **उदयपुर (सेक्टर-11) :** पण्डित जितेन्द्रजी मुम्बई, 44-46. **मेडतासिटी :** पण्डित अंकुर शास्त्री, सौरभजी शास्त्री, पण्डित अरविन्दजी शास्त्री, 47. **इंथालीखेडा :** पण्डित अखिलजी शास्त्री मंडीद्वीप, 48. **मेथवाला (बांसवाड़ा) :** पण्डित अचिन्तजी शास्त्री बण्डा, 49. **कोटा (मुमुक्षु आश्रम) :** पण्डित निलयजी शास्त्री बरायठा, 50. **कोटा (धरसेन विद्यालय) :** पण्डित अभिनवजी शास्त्री बंडा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, 51. **कोटा (छावनी) :** पण्डित प्रेमचंदजी बजाज कोटा, 52.**केलवाडा :** पण्डित विनीतजी शास्त्री पोहरी, 53. **थानागाजी :** पण्डित आयुषजी शास्त्री जबलपुर।

उत्तरप्रदेश प्रांत

1-2. **अलीगढ़ (मंगलायतन) :** पण्डित हितेषभाई चौवटिया मुम्बई, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, 3. **मैनपुरी :** पण्डित कैलाशचंदजी 'अचल' ललितपुर, 4. **ललितपुर (सीमंधर जिनालय) :** विदुषी प्रमिलाजी इन्दौर, 5. **मेरठ (तीरगरान) :** ब्र. अमित भैय्या विदिशा, 6. **भौगाँव :** पण्डित अखिलेशजी शास्त्री सागर, 7. **खतौली :** पण्डित विकासजी शास्त्री बानपुर, 8. **बागपत :** पण्डित अशोकजी, उज्जैन, 9. **मडावरा :** पण्डित सजलजी

शास्त्री आरौन, 10. **जैतपुरकला :** पण्डित नागेशजी पिड़ावा, 11. **कानपुर (किदवईनगर) :** पण्डित अनुभवजी शास्त्री जबलपुर, 12-13. **शिकोहाबाद :** पण्डित मयंकजी शास्त्री बण्डा जयपुर, पण्डित आकाशजी शास्त्री हीरापुर जयपुर, 14-15. **ललितपुर (शीतलनाथ जिनालय) :** विदुषी वासन्तीबेन देवलाली, विदुषी प्रतीतिबेन देवलाली, 16. **धामपुर :** पण्डित स्वानुभवजी शास्त्री गुना, 17. **करहल :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, 18. **सहारनपुर :** पण्डित अभिषेक मंगलार्थी, 19. **एतमादपुर :** पण्डित विवेकजी रानीपुर, 20. **रुडकी :** पण्डित प्रमोदजी मकरोनिया, 21. **खेकड़ा :** पण्डित कान्तिकुमारजी इन्दौर, 22. **अमीनगरसराय (बागपत) :** पण्डित धर्मचन्दजी जयथल, 23. **अमीनगरसराय (विधान हेतु) :** पण्डित रजतजी शास्त्री जयपुर, 24. **शेरकोट :** पण्डित प्रदीपजी शास्त्री धामपुर, 25. **सुल्तानपुर :** पण्डित धीरजजी जबेरा।

गुजरात प्रांत

1. **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) :** पण्डित निलेशभाई शाह मुम्बई, 2. **अहमदाबाद (मणीनगर) :** पण्डित सुरेन्द्रकुमारजी इन्दौर, 3. **अहमदाबाद (अमराईबाडी) :** पण्डित उदयमणिजी शास्त्री भिण्ड, 4. **अहमदाबाद (पालडी) :** पण्डित अनिलभाई दहीसर मुम्बई, 5. **अहमदाबाद (ओढव) :** पण्डित प्रतीकजी शास्त्री मुम्बई, 6. **अहमदाबाद (आशीषनगर) :** पण्डित विवेकजी जैन मुम्बई, 7. **अहमदाबाद (नरौडा) :** पण्डित श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर, 8. **अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित सचिनजी अकलूज, 9. **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) :** पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, 10. **अहमदाबाद (चैतन्यधाम) :** पण्डित सचिनजी शास्त्री गढी, 11.**हिम्मतनगर :** ब्र.कल्पना बेन जयपुर, 12-13. **दाहोद :** पण्डित विवेकजी शास्त्री दलपतपुर, पण्डित अभिषेकजी शास्त्री जोगी मुम्बई, 14. **रखियाल :** पण्डित रतनचन्दजी शास्त्री कोटा, 15. **बड़ौदा :** पण्डित चैतन्यजी शास्त्री कोटा, 16. **तलोद :** पण्डित देवेन्द्रजी हिम्मतनगर, 17. **वापी :** पण्डित मनोजकुमारजी जबलपुर, 18. **भावनगर :** पण्डित दीपकजी अहमदाबाद, 19. **जामनगर :** पण्डित निशंकजी शास्त्री बारासिवनी, 20. **राजकोट :** पण्डित अश्विनभाई शाह मुम्बई, 20. **राजकोट (पूजन-कक्षा) :** पण्डित वीकेशजी शास्त्री खड़ैरी।

अन्य प्रांत

1. **बेलगाँव :** डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल जयपुर, 2-3. **कोलकाता :** पण्डित शैलेषभाई शाह तलौद, पण्डित करणजी शाह अहमदाबाद 4. **बेलगाँव (पूजन विधान) :** पण्डित एकत्व शास्त्री खनियांधाना, 5. **बैंगलौर :** पण्डित ऋषभकुमारजी इंजीनियर इन्दौर, 6.**बैंगलोर :** पण्डित किशोरकुमारजी शास्त्री राजुरा, 7. **एरनाकुल्लम (केरल) :** पण्डित हिमांशुजी दिल्ली, 8. **यमुनानगर (हरियाणा) :** पण्डित स्वप्निलजी शास्त्री भोपाल, 9-10. **सम्मेदशिखर (कुन्दकुन्दनगर) :** पण्डित महेशजी ग्वालियर, पण्डित आलोकजी शास्त्री कारंजा, 11.**हरिद्वार (रानीपुर) :** पण्डित विनीतजी शास्त्री आगरा, 12. **गन्नोर मण्डी :** पण्डित हुकमचन्दजी

(शेष पृष्ठ 17 पर ...)

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली 30 चौबीसी के 720 तीर्थंकर की प्रतिमाओं का विहंगम दृश्य

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन में सी-ब्लॉक के 1 BHK की बिल्डिंग पूर्ण

R.N.I. No. 38278/83 ***Postal Regd. No. JaipurCity/421/2018-20***

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की प्रेरणा से स्थापित
ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन की यशोगाथा

"समय की ओर"

डॉक्यूमेन्ट्री फिल्म का प्रदर्शन

रविवार, दिनांक 23 सितम्बर (अनंत चतुर्दशी)

को 2.30 बजे से 3.40 बजे तक अरिहंत चैनल पर

यह गाथा है पाषाण से परमात्मा की।
यह गाथा है बालक से विद्वान की।।

आप सब अवश्य देखें एवं
अपने मित्रों, परिजनों को भी बतावें।

यह चैनल टाटा स्काई के चैनल नं. 1067, एयरटेल के 687, वीडियोकॉन के 489 एवं डिश टीवी के 1107 पर है।

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- **Pandit Todarmal Smarak Trust , A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015**